संगीत शिक्षण में रागों का समय सिद्धांत एक अध्ययन

निर्मल सिंह
यू.जी.सी.नेट उत्तीर्ण एम.फिल. शोध छात्र, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

आज के संदर्भ में 18 वीं शताब्दी के अंत तथा 19 वी शताब्दी के आरंभ को भारतीय संगीत के पुनरुत्थान का समय माना जाता है। प0 विष्णु दिगम्बर पुलस्कर व प0 विष्णु नारायण भातखण्डे आदि विद्वान संगीतज्ञों के प्रयत्नों के फलस्वरुप गुरु शिष्य परम्परा का संस्थागत शिक्षण के रुप में विलय हुआ। इस तरह संगीत शिक्षण विकसित होता हुआ हमारे समक्ष आया। आज के दौर में संगीत शिक्षा किसी भी संस्था, महाविद्यालय विश्वविद्यालय से प्राप्त की जा सकती है। जैसा कि हम जानते ही हैं कि संगीत का आधार राग है और राग ही संगीत का पाठ्यक्रम भी है। भारतीय संगीत में रागों को गानें–बजानें के कुछ नियम हैं। इस नियम को राग का समय सिद्धांत के नाम से जाना जाता है। यह नियम कहां तक उचित है अन्यथा नहीं। इसे जानने के लिए यह जानना ज़रूरी है कि राग क्या है?

राग

राग भारतीय संगीत का आधार है। राग प्रधान होने के कारण ही भारतीय संगीत को 'रागदारी संगीत' भी कहा जाता है। राग की परिभाषा शास्त्रों में इस प्रकार दी है–

योयम् ध्वनि विशेषास्तु स्वर्ण विभूषितः।
रंजको जनचित्तानाम सः रागः कथितो बुधैः।।

अर्थात ऐसी ध्वनि जो स्वर और वर्ण से विभूषित हो तथा मनुष्य के चित्त को आनन्दित करे, उसे राग कहते है।

आधुनिक भारतीय संगीत में रागों को गानें–बजानें का एक निश्चित समय माना गया है। प्राचीन काल में भी कहीं–कहीं रागों को गानें–बजानें के समय का वर्णन मिलता है, जिससे यह पता चलता है कि प्राचीन समय में भी रागों को समयानुसार गाया–बजाया जाता था। रागों के गानें–बजानें के समय सिद्धांत का विवेचन या उल्लेख नारद जी नें किया था, जिसमें उन्होंने यह माना है कि पापों से मुक्ति पाने के लिए राग को समयानुसार गाना–बजाना चाहिए अर्थात ऐसा माना गया है कि राग को निश्चित समय पर गाकर या बजाकर मानव पापों से मुक्त हो जाता है। यह राग समय निरंतर चलता रहा और मध्यकाल से होते हुए आधुनिक काल तक पहुंचा। आधुनिक काल में आकर विष्णु

नारायण भातखण्डे जी नें राग समय सिद्धांत को विधिवत रुप से स्थापित किया। परंतु विद्वानों ने रागों का समय अपने–अपने मतानुसाार अलग–अलग ढंग से किया है।

1) शरीर विज्ञान के आधार पर

मतंग द्वारा शरीर में तीन तत्व होनें की बात कही है। वे हैं–वात, पित्त, कफ। उन्होनें ये बात भी कही है कि ये दिन–रात में समयानुसार बदलते हैं। सारणी निम्नलिखित है–

समय	तत्व	घण्टे
प्रातः	कफ	3–8
दोपहर	पित्त	8–3
शांम	वात	3–8
रात्रि	पित्त	8–3

मतंग के अनुसार निम्न समय पर निम्न–निम्न तत्व प्रबल होते है। प्राचीन संगीतज्ञों इसी आधार पर रागों का समय निर्धारित किया। उदाहरण के लिए परिज्ञातधनाश्री राग को ही लेते है। इस राग का स्वरुप कफ है। इसलिए इस राग को दिन के तीसरे प्रहर में गाना चाहिए, इस समय पित्त प्रबल होता है।

2) स्वरों की संख्या के आधार पर

कईं विद्वानों के मतानुसार स्वरों की सख्या भी किसी राग का गायन–वादन समय निर्धारित करते है। उदाहरण के लिए गुणकली और भुपाली। औडव (5 स्वरों वाले राग) राग संधि प्रकाश माने गए है।

3) ध्वनि विज्ञान के आधार पर

भातखण्डे जी के अनुसार राग का समय निर्धारण तीन तत्व करते है–गुण, तारता, ध्वनि की गति। गुण के अंर्तगत रागों में लगनें वाले स्चर आते हैं अर्थात स्वरों के शुद्व, कोमल, तीव्र रुप भी राग का समय निर्धारण करते है। दूसरा, ध्वनि गति के अंर्तगत ध्वनि की स्थिरता व गतिशीलता को लिया गया है तथा तीसरा तारता है, जिसका सम्बन्ध स्वरों ऊंचता और नीचता से है अर्थात वादी स्वर कहां स्थित है। सप्तक को दो भागों में विभाजित किया गया है। पहला भाग पूर्वांग (सा रे ग म) व दूसरा उत्तरांग (म प ध नि) है। अतः किसी राग का वादी स्वर अगर उत्तरांग में है, तो वह राग दिन के 12 बजे से रात के 12 बजे तक गाया बजाया जाएगा तथा वादी स्वर पूर्वांग में होने से उस राग को रात के 12 बजे से दिन के 12 बजे तक गाया–बजाया जायेगा।

4) ऋतुओं के आधार पर

राग का समय निर्धारित करने के लिए भिन्न–भिन्न मतों में से एक मत ऋतु के आधार पर समय निर्धारण भी है। ऐसा माना जाता है कि अगर रागों को भिन्न–भिन्न ऋतुओं में गाये जाए तो उनका प्रभाव और ज्यादा बढ जाता है। उदाहरण के तौर पर बसंत, बहार, व मेघ मल्हार आदि।

5) सौंदर्य शास्त्र के आधार पर

राग और रस का आपस में बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध है। जिस प्रकार राग का सम्बन्ध स्वर से है, ठीक उसी प्रकार रस का सम्बन्ध भी स्वरों से है। हर स्वर का अपना एक रस व भाव है। जैसे–

सा–वीर, रौद्र, अद्‌भुत	रे– वीर ,रौद्र, अद्‌भुत
ग– करुण, हास्य श्रंगार	म– हास्य श्रंगार
प– हास्य श्रंगार	ध– भयानक, विभत्स
नि– करुण	रे– करुण
ग– शांत, वीर	ध– करुण
नि– शांत, वीर	

जब ये स्वर आपस में एक दूसरे से मिलते हैं तो ये रस को और अधिक सक्षम या खूबसूरत तरीके से प्रस्तुत करते हैं।

1) रे ध कोमल वाले राग

ऐसे राग जिनमें रे ध कोमल होते हैं, वे संधि प्रकाश समय में गाये या बजाये जाते है। सूर्योदय व सूर्यास्त के समय को संधि प्रकाश कहा जाता है अर्थात जो राग सुबह गाए जाएं, उन्हें प्रातः कालीन संधि प्रकाश तथा शांम को गाए जाने वाले राग सांयकालीन संधि प्रकाश राग कहलाते है अर्थात ये राग 4–7 बजे के मध्य गाए जाते हैं। कौन सा राग सुबह गाना है या शांम को, ये सब समय मध्यम (म) निश्चित करता है, जिसके बारे में विस्त्रत वर्णन आगे किया गया है।

2) शुद्व रे ध वाले राग

जिन रागों में रे ध शुद्व होता है, वे राग सधि प्रकाश रागों के एकदम बाद आते है अर्थात 7–10 बजे तक गाए बजाए जाते है।

3) कोमल ग नि वाले राग

ये राग रे ध शुद्व स्वरों वाले रागों के एकदम बाद में अर्थात 10–3 बजे के बीच गाए बजाए जाते है। इसमें काफी, भीमप्लासी, भैरवी, तोडी आदि राग आते है।

अध्वदर्शक स्वर

राग के समय निर्धारण में मध्यम अर्थात म स्वर का बहुत ही महत्व है। मध्यम ही एक ऐसा स्वर है, जो अपनें शुद्व रुप से ऊपर चढ सकता है। अतः म का शुद्व व विकृत रुप ही राग का समय निर्धारण करता है। अगर रागों में शुद्व मध्यम लग रहा हो, तो उसका गायन–वादन समय रात के 12 बजे से दिन के 12 बजे तक तथा म॑ तीव्र वाले रागों का समय दिन के 12 बजे से रात के 12 बजे तक होगा। अतः किसी भी राग में मध्यम स्वर की स्थिति को देखकर ही उसके समय का अनुमान लगाया जा सकता है। अतः समय निर्धारण में अहम भूमिका निभाने के कारण ही इसे अध्वदर्शक स्वर कहा गया है।

मनोवैज्ञानिक पक्ष से

मानव मन तथा भाव की अवस्था दिन गुजरनें के साथ–साथ बदलती रहती है। यह इसलिए होता है, क्योंकि जैसे–जैसे दिन बढता जाता है, उसी प्रकार मन के भाव भी परिवर्तित होते रहते हैं। जैसे भाव सुबह होते हैं, वैसे शांम को नहीं होते। सुबह के समय अर्थात कडा सगीत सुनने को मन नहीं करता, कोमल प्रकृति के रागों या संगीत को सुनना अच्छा लगता है। ठीक जैसे–जैसे दिन ढलता जाता है, उसी प्रकार दिन के थके हारे मानव पर कडे राग अर्थात म॑ तीव्र वाले राग अपना प्रभाव डालते हैं।

आलोचना

भारतीय संगीत के इतिहास में रागों के समय सिद्धांत का कोई उल्लेख नहीं मिलता है। प्राचीन काल में कुछ उल्लेख नारद व शारंग देव की कृतियों में मिलता है। यह बात कुछ हद तक सही लगती है कि कई राग किसी विशेष मौसम तथा समयानुसार गानें पर अधिक रसानुभूति करवाते हैं। परन्तु रागों के गानें–बजानें का समय केवल स्वरों के आधार पर निश्चित करना वैज्ञानिक प्रतीत होता ळें

इसी प्रकार यदि हम आधुनिक समय सिद्धांत को लें तो यह साबित होता है कि ये नियम सभी जगह एक सा साबित नहीं होगा। भारत में विभिन्न शहरों में सूर्योदय व सूर्यास्त का समय भिन्न–भिन्न है जिसके कारण एक जगह गाए गए राग का समय दूसरी जगह बिल्कुल उल्टा होगा। इसे हम इस उदाहरण द्वारा भी समझ सकते हैं।

एक अध्ययन के अनुसार भारत के पूर्वी छोर (डिबरुगढ) व पश्चिमीं छोर (द्वारिका) में सूर्योदय व सूर्यास्त के समय का अंतर 103 मिनट का है। यह भी स्पष्ट है कि सभी प्रहरों की समय सीमा सभी स्थानों, ऋतुओं, महीनों में एक सी नहीं हो सकती । उदाहरण के लिए जून से अगस्त तक द्वारिका में

संधि समय की सीमा 4:30 से 7:30 तक तथा 103 मिनट के अंतर के अनुसार डिबरुगढ में संधि समय की सीमा 2:45 से 6:00 बजे तक होगी अब यदि आधुनिक समय चक्र को देखा जाए तो यह पता चलता है कि डिबरुगढ में रात्रि के अंतिम प्रहर के राग प्रातः समय संधि में आ जाऐंगे क्योंकि समय चक्र के अनुसार रात्रि का अंतिम प्रहर 4 से 7 बजे माना जाता है। यदि यह मान लें कि राग समयानुसार ही गानें हैं तो डिबरुगढ में इन रागों को 2:45 पर ही गाना प्रारंभ करना होगा, जो मौजूदा चक्र में निबद्व है।

सर्वकालीन राग भैरवी दिन व रात में किसी भी समय गाया जा सकता है क्यों? क्या इसे गानें का कोइ निश्चित समय नहीं है? अगर भैरवी राग को किसी भी समय गाया–बजाया जा सकता है तो बाकी रागों के लिए नियम बनाना तर्क संगत नही है। कक्षा में विद्याथियों की बात लेते हैं। शिक्षक को विहाग राग चिद्यार्थियों को सिखानाा है तो शिक्षक विद्यार्थियों को यह नही कह सकता कि यह राग रात्रि के दूसरे प्रहर में ही सिखाया जाएगा। यहां पर भी यह राग समय सिद्धांत तर्क पूर्ण नहीं है। स्वरों का अपना प्रभाव नहीं होता। इसका प्रभाव गायक या वादक पर निर्भर करता है। अगर कोई योग्य कलाकार किसी राग को समय के विपरीत भी गाता–बजाता है, तो उस राग से भी रसानुभूति होगी अर्थात श्रोताओं को सुननें में अच्छा लगेगा। लकिन अगर कोई बेसुरा बेताला किसी राग को समयानुसार भी गाता–बजाता है, तो भी श्रोताओं को उससे रसानुभूति नही होगी। हमारे राग समय सिद्धांत में कई राग ऐसे भी है, जो संधि प्रकाश राग न होते हुए भी संधि प्रकाश के समय गाए जाते हैं। जैसे–मारवा, पूरिया आदि।

अंत में हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि राग समय सिद्धांत पूर्णतः वैज्ञानिक नही है। इस समय चक्र में बहुत सी कमियां हैं। समय सिद्धांत का गहनता से अध्ययन करनें के बाद हम यह कह सकते हैं रागों का समय सिद्धांत होना ही नही चाहिए। क्योंकि स्वरों का प्रभाव तो गायक या वादक पर निर्भर करता है, तब समय चाहे कोई भी हो, वह तो अपना प्रभाव दिखा ही देगा। अगर समय सिद्धांत को अपनानाा ही है, तो इसकी कमियों को दूर किया जाए। ये कमियां तभी दूर हो सकती हैं, अगर समय–समय पर विभिन्न संगीत सम्मेलन, संगीत–संगोष्ठियां व सेमीनार आदि होते रहें। सगीत सम्मेलनों व संगोष्ठियों में अगर सगीतज्ञ व संगीत गुणीजन इस विषय पर गहन चर्चा करेंगे तो निश्चय ही कोई न कोई समाधान अवश्य निकल आएगा।